

2882

STAMP



महाभारत

१

सागरतरेविविधमध्वमयमहामग्निकनकवाजिकपर्यादिदहर्जवक्षी  
पैश्मपेयवरादायनिउरुवककउ  
नव्यापियाव॥ व॥ नमोपंचव  
हृत्विश्वरुतपेवमन्त्राणिश्मस्यदि  
नसाह्वयकुतयगिमिबघनधावनप  
याउपक्षीपेवाउपक्षीपेनीजाकुधनं॥ स्वसनलाउपक्षीपेवाउपक्षी

वनपंचवर्गपंचवि  
ज्विष्वग्निविश्व  
पानलावहगिजिनम  
॥ राजातवेदनम  
१

महाभारत

पंचउविदिगुरुवनवाउपक्षीपणीत्वधुपवधु॥  
प्रांविद्यालनवधिवयावियसप्रभ  
ववाउदिद्विष्वग्निमग्निकलनिधि  
सुववनमिववसातगतिप्रविमा  
कथाविमंरुतिपूजाश्चुभवविता  
वातवजलनिधिसंतवयसउरुती॥

॥ दिवदन  
क्षत्रवृंविद्यामश्मव  
नित्तवदयकि॥ ॥  
वनमनकसूमउद  
वधिसप्रपविपूवि  
॥ वागाशागन्धाहववि







१२४४

॥ अहि उवन नु म न व वा य र वा ठ अहि उवन नु म न व वी वं वी  
वा २ अहि नि उवन न व ना ट क स म्यु मा दि व रु ति ग ध उ न का  
का वा ॥ ॥ मूहि नि गि सं ग र गु व वा नं उ वा र ध द्वा दि ए  
व ता व म् ता वं २ उ व म म व ध र य वं ध न द्वा दि ग ध व र य म्  
व म् वि य सं ता वं ॥ ० ॥ वा रा ना ट वा व रू व द न अि नि  
ता य न म न्द वी २ म् द्वा द ठ उ उ प ह व धा दि व र ॥ ध ॥ उ म् द

नमः॥

वीवावर्णीमामकिद्वीशजगत्पुत्रादिकमयनसूत्राणां ॥ ॥  
 आगमवेदपूजागवषाणश्यागाधर्मः  
 ॥ ॥ पंचवक्त्रस्वरूपवर्णनं ॥ ॥  
 वृवहृदुहवृव ॥ ॥ सकलगुर्वृव  
 हनयिवाग्वजसूत्रास्वरूप ॥ ० ॥  
 मंभकावृगवृपध्वरश्चक्रविसत्त्वउल्लावधवृ ॥ ॥ ॥







ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

वीसहजाननमवतिधवाश्नमामि २० ॥ स्वयं सन्ववागकगुव  
वभग्नोवाधिता ॥ ० ॥ वागारागहं  
यिलसम्बवधवयिकेवाह्विविव  
लुयामगानमकटकगदिगाम्बवा  
सम्बववायाममममनवीभावका  
वजवावाहिहउमहिभावभाव ॥

डिगाहउरुवगकिय  
गाहउमवावकवम  
॥ ५ ॥ ॥ वववमाव  
लाहमविवाहिनी  
॥ गाविहयभवलेम

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

हमयनकप्यववयिकंवाला २ गाराधनीलवधुवधिवजजामवम  
गुलरवलीभा ॥ ॥ अियंधउषटः  
पयिधयिधन्यरहावा २ हमविवा  
विनूदधमिमन्वावा ॥ ॥ गगवकि  
वसकगुवववगमावा ॥ ॥ २ समयाम  
लसम्बनवजवावाहि ॥ ० ॥ वागाराकनदिगाहिलुभापयि

हं हदिगावसम्बव  
हिनीवजवावाहीहम  
लितावजकलियाउ  
नन्दरुलिंवातमधुः  
कनदिगाहिलुभापयि







ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

वह्निविविहवर्तयाश्वाद्युविकोवेयाचिउक्तिहववमूधुव  
रुसनससंयोगासहजसंवलिनेया  
यवववगपसाद२पुसमालिंगाग  
सायिधून्यकवगा॥ ० ॥ वागागा  
नकालिकेमवमिन्ननवायनविन्य  
वजसत्त्वपवमंभवलीनवकी॥ ॥  
॥ वमिप्रसहसुकिवमदम

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

सूर्यसहसुवतिति॥ ॥ वावह्विविहवपममिन्ननवायसत्त्वव  
ति॥ ० ॥ वागागागामकवि॥ रुंरुं  
वंदामालिंगागथागाधव॥ धु॥ वाह  
० ॥ तनारुंरुं तनाकतारुंरुं ॥ वास  
व२कसमविवपनदहधव॥ ॥  
गुगकटायो२नम४रुंनम४रुंरुं वजउमगुगपुषयि॥ ० ॥



कवच ११

वागागा नाट ॥ कवनवृपला के श्वव कवनवृपवद्धं २ मखयनि  
वंजनसयवविशुद्धि ॥ धे ॥ नाव  
मानं २ खवांगउमयुगिधनवगिधमा  
निवंजनमंकलविहना २ मन्तुन  
द्धि ॥ ॥ केरुवालहउवजकेरु  
आकाङ्गगति संसावनवडा ॥ ॥ रुलरुलरुलरुमरुमवस

कवच १२

दृश २ गिनि उवननाथनकसमववा ॥ ॥ वागापापं वम ॥ ऊ  
यंवायुविहववघवयि २ सयवस  
॥ धे ॥ ॥ कतेरावेकी पाइकमलम  
भकावा २ हावांगरातनभविरुधित  
डिनिडिगिडि भयंकिडिभिन्नयना ॥  
वकडनवसीनमाला २ किरववांगववमकडकशा ॥ ॥ भसि



वसिष्ठसंहिता १३

वसिष्ठसिंहनालाकजलसुताश्चकमुत्रिकप्यवताम्बुवसस्त्वसा  
ना ॥ ॥ तनयिसुवतवजवाकृदि दासाश्चोक्तेदेवी  
पुसादाशीहवववाया ॥ ० ॥ वा गामावाशीवाकृया  
गिनीहवववायाश्चिउवननाथद वीमपाशा ॥ धु ॥ पि  
वयिवमहावसमहासुखकवयिया श्वजदेवीरुतिया  
मनरुवहनि ॥ ॥ उच्चनाविजिदलकमलसंथावाश्देहिवि

वसिष्ठसंहिता १४

लाभापवशरुदयि ॥ ॥ उंजयिवपंचमहासुखश्वीश्चपंच  
सिवसवीजवानधो ॥ ॥ सरुगुव ववभापसादवउर्था  
लिषकश्चाधवनीसंसावसमडा ॥ ० ॥ वागाशासा  
॥ धनाशी ॥ भवाकाकामहासुखक ववउमानन्दहा  
यिश्चिउवनरुलयिमहासुखवा यावउसूर्यरयिम  
नीया ॥ धु ॥ नपापविनपधनलिनाधिउवनवसुवपीर



सर्वविकल्पविधनीदेवीमूनरुवववदायनी॥ ॥ नमो  
 समस्तुतुदयानथितिकलोनलमि ववंधयीश्चकविक  
 पानववधीराधवीपुष्पस्रनववदा यनी॥ ॥ दीगोव  
 वमयूटकधीवकीकलुलेकगीध नीश्चकमृखला १०  
 पायवधवीगिधमूडनवसितमाल ॥ ॥ सर्वकथा  
 कजननीदेवीविवाहिरहावमकावाश्चोवज्यागिनीववमि

श्रगाकगवंतिसमयसववजा॥ ० ॥ वागावकनदि॥ शीहवज  
 नेमात्मादेवीलिउवननाथश्चपंवजिन व्यापितापंववर्धुद  
 लमा ॐ नमोमामिश्चोराभपूयगुर्वे म्माश्चवकधीगुम्भ  
 ध्ववीवज्यागिनीधूम्यता॥ ॥ पूर्वदिगस्थिरुहवव  
 नीलवर्गुश्चदस्तिपाकधवीवामविं इवेवा॥ ॥ द्यस्म  
 वावोत्रियागिनीदेवीश्चभवकिलितावजककावसंवजा॥ ० ॥

श्रीदेवकजननामा १५



५३०॥५३०॥

स्वागतासतिगण्डलि॥ उवंगमरुचमशीवितरुचमि॥ भासा २००  
 उनीलरुतिपिंगालकभा॥ ॥ ध्रुगज गंदनूकम्याकृपासु  
 गदवी २ इक्षुमायविद्याशनीदेवी ॥ यरुनेयनजिनि  
 कूडमाना २ खभकवठिकपावनीसात्त ता॥ ॥ व्याधुवर्म  
 वमुपुमाविष् २ षर्वसंधाद्वभावाका का॥ ॥ वनममन  
 मशीउरगतावूमिमासा २ रुचयिभूमाघवजरीरुचविता॥ ० ॥

गद नृवाम्या कृपासु  
॥ यक्रुनेयन छिनि  
हा ॥ ॥ व्याखुवर्म  
का ॥ ॥ वनममन

११

अवनिनिर्गन् ११

प्रागा॥ कामा॥ नृवनिनिहिकजाननीवसमदहा॥ कंकवलि  
 नयनलीषमवदना॥ धृ॥ ॥ तेनारुं ॥ ॥ तेनारुं ॥ ॥ तेनारुं ॥  
 हूं हूं शारुनवलकाधवाया॥ ॥ ॥ निविदिकघनरुकिः  
 ॥ अहिकमं रोरपाधवभ्रुधविधि ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  
 विहववुभा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥



महासिद्ध १२

बहुतदायकं ॥ ० ॥ वागा ॥ वसक्त ॥ मरुसिद्ध समर्थति  
दहपुतास्वना ॥ विविधिवत्तमसिद्ध ॥ कटवित्तपिका ॥ धु  
॥ नावेवशी ॥ मवलवीना ॥ रत्नावत  
मवलता ॥ ॥ धामउरुवविद  
मालिंगा ॥ मध्यमहामहं ॥ ॥ मडादर्शना ॥ पुता  
वर्तयेकना ॥ रत्नस्यनिहकवत्तु ॥ निपाठा ॥ ॥ माल ॥ १२

विष्णुसंस्तव १२

बहुवदपनिद्वीतविद्युहक्ता ॥ रविशिक्षियगानरगागाविवा  
सयिम्बला ॥ ० ॥ वागा ॥ का  
षममदहा ॥ सववसहा ॥ जिंठाकलः  
जाविउवदना ॥ द्वादशवकुलवकल  
शीतिवकुं ॥ ध्वनामावतयतवतय  
विंशतिपी ॥ १० ॥ ध्वनादुलिंशीवीवंवीवध्वना ॥ रवकुवकपनिवृ  
माउ ॥ हंवी ॥ ऊसंतव  
रुमधवा ॥ द्वादशउ  
गा ॥ धु ॥ नमामि  
हवर्ध ॥ ॥ वकु



तादृशीसंपूटपुष्पलितस्थिता ॥ ॥ पुष्पसंपूटमातिका  
 लिपदाक्रान्तामितिसेरुवा २३३  
 प्रामिणीवकुसुमवना ॥ ॥ ॥  
 नयिगीतुशीकलिते ॥ २३३  
 समानाधिता ॥ ॥ ॥  
 नमोदयमूनपमगागयकमलजसाधना २३३  
 नमोदयमूनपमगागयकमलजसाधना २३३

१३

वायुशीवियादवीपागविद्रुसमजाठिता ॥ ध्रु ॥ नमामिनि  
 वासंतनीवद्रुव ॥ ॥ तादृशुसुलनसं  
 समरुजपुकागिरुजलजवद्रुसमया  
 रायागववसाधिवद्रुवतीभवमधु  
 मलद्रुयावद्रुवपिरुमाहिनिमि  
 ना ॥ ॥ ॥  
 ॥ ॥ ॥



पश्चिमदिगास्थिता २९

महाशयवमाविबमाभ्यनक्तु दिवमहासुखसुगामसम्पदव  
प्रापिता ॥ ॥ हवजकासवकुशी  
काटिसिद्धापावगाता ॥ श्रीरक्तजालिका  
पुत्रमहासुखजानक ॥ ० ॥ वा  
दिगास्थिता एतादीदवीरांकावसंजा  
दिगास्थिता एतादीदवीरांकावसंजा तास्यामवभुता ॥ ५

वकुसुमसुखवभनक्त  
नपुत्रुगिविजाबंधव  
गताकामाउवृषापूर्व  
तानीलवभुता ॥ १४

॥ हवजनेवात्मादवीमहयागिनीदिगाविदिगास्थितापुत्रमामि  
निभं ॥ ॥ पश्चिमदिगास्थितावता  
पीकवेभुता ॥ ॥ रुद्रदिगास्थिताद्यस्य  
वक्रवभुता ॥ ॥ अग्निदिगास्थितास  
तास्यवभुता ॥ ॥ नारायणदिगास्थिताव  
ताकृष्णवभुता ॥ ॥ वायुदिगास्थिता ॐ विनीदवी उंकावसंजा

तीदवीवकावसंजाता  
वीदवीवकावसंजाता  
ववीदवीसंकावसंजा  
जतीदवीवकावसंजा



माकर्पत्रवर्धता २००० नदिगस्थिता प्रपक्षसी द्वीपं कावसंज  
 तास्या मेव नृणां ॥ ॥ दूतवासी  
 क्रमलमध्वस्वयं संक्राता २००० डोंकि  
 (आहवदानपत्नीनां स्वयं दूतदाता  
 लिखितं यहि किरातका पवाहातय  
 जनं लिखापि किरादिन दूत शुभं ॥

नामवनां रस्थिताव  
 वलिंशावाय्य द्विजवं  
 ॥ ॥  
 श्रीवर्जावाय्य वलव  
 ॥ ॥

१५